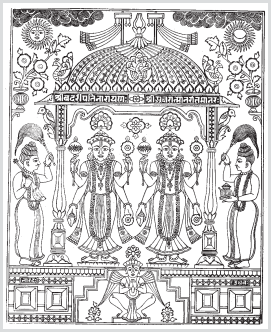

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ अंक : ६० एप्रिल-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	भगवा रंग	०४
०४.	सकारात्मक उर्जा का स्थान मंदिर	०५
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वचन नारायणघाट मंदिर	०६
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	०८
०७.	सत्संग बालवाटिका	०९
०८.	भक्ति सुधा	१५
०९.	सत्संग समाचार	१८

॥ अस्मदीयम् ॥

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रादुर्भाव चैत्र शुक्ल-९ को हुआ था, जिसे २३१ वर्ष हो गया । इतने थोड़े समय में श्री स्वामिनारायण संप्रदाय विश्व फलक पर फैला हुआ है । प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षता में देश-विदेश की धरती पर-अमेरिका, युरोप, आफ्रिका, ओस्ट्रेलिया, न्युजीलेन्ड, केनेडा, मिडल इस्ट में भव्य मंदिरो का निर्माण हुआ है । मंदिरों के बढने से मूल संप्रदाय के आश्रितो की संख्या भी खूब बढी है । नियमित मंदिर आने वाला वर्ग आज मंदिरों में देखने को मिलता है । प.पू. महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव युवक मंडल को खूब तैयार किया है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सतत देश-विदेश में सत्संग के प्रचारार्थ विचरण करते रहते हैं । अमेरिका में १-२ मंदिर (आई.एस.एस.ओ.) प्रतिवर्ष बनता ही रहता है । यह सब देखकर ऐसा लगता है कि विदेश की धरती पर नई पीढी को आध्यात्मक रंग चढ गया है । इसमें कोई दो राय नहीं है । जिस देश में धर्म होगा उस देश की खूब प्रगति होगी । गुजरात के बनासकांठा जिले में महाराज पधारे नहीं थे फिर भी उनकी दृष्टि अवश्य रही होगी - जिससे प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री ने कृपाप्रसाद से वर्तमान में भाभर, थरा, राधनपुर इत्यादि स्थानों के बहुत सारे सत्संगी श्री नरनारायणदेव के निष्ठावाले हुये हैं । भाभर में तो नजदीक के समय में श्री नरनारायणदेव के भव्य मंदिर का निर्माण कार्य होने जा रहा है । यह सब देखकर यह स्पष्ट हो रहा है कि महाराज का जो अलौकिक शब्द ''पांदडे-पांदडे स्वामिनारायण नाम लेवाशे'' इसकी सार्थकता सामने दृष्ट हो रही है । वस भक्तों ! उत्सवों की परम्परा अभी ऐसे ही चालू रखना है । हम ऐसे उत्सवों का दर्शन करके अपने जीवन को धन्य बनाये, यही श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १९-०० ● शयन आरती २०-३०

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१२)

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-बापूनगर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडीया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर असलाली कथाप्रसंग पर पदार्पण।

६. श्री गिरिशभाई भलाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण राणीप।
गांधीनगर सेक्टर-५ कथा प्रसंग पर पदार्पण।

८-९. भक्तिनगर (मानकुवा) कच्छ रंगोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (जि. खेड़ा) रजत जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

११ से १२ उमैया वडाड (कच्छ) तथा हीरापर (कच्छ) पदार्पण।

१३ से २८ अमेरिका के धर्मप्रवास में पदार्पण।

२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर मणेकपुर रजत जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३० से ३१ नारायणपर (कच्छ) पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**
नारायणघाट : **www.narayanghat.com**

भगवा रंग

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

हिन्दु धर्म में त्यागी भेषधारी भगवा रंग के वस्त्र पहनते हैं। कितने वस्त्र तथा कैसे वस्त्र पहरना यह अपने सम्प्रदाय के अळग अलग नियम होते हैं । सत्वगुणी संप्रदाय के भेषधारी का भगवारंग पसदं करने के पीछे अनेको कारण है। शास्त्रोक्त रीति से संशोधित भगवा रंग को विज्ञान ने भी स्वीकार किया है। जो मात्र कौपीन धारी साधु हैं वे भी साधु हैं, वे भी भगवा रंग का कौपीन धारण करते हैं।

भगवा रंग अर्थात् हल्का लाल कलर । यह कलर अग्नितत्व का प्रतीक है। अग्नि सर्वनाश करने वाला तत्व है । इसलिये तो सभी के साधसम्बन्धतोड़कर (सर्वनाश करके) ही सन्यासी (साधु) होते हैं।

दूसरा कारण : सूर्योदय के समय पृथ्वी पर सूर्य अपने किरणों को जब बिखेरता है उस समय अर्थात् प्रभात काल में भगवा रंग की किरणें दिवस के आरम्भ में दृष्टिगोचर होती है। उस समय को शास्त्रों में सर्वोत्तम समय कहा गया है । ब्राह्ममुहूर्त में उठना और भ्रमण करना, पूजा पाठ करना, सूर्य को अर्घदेना इत्यादि क्रिया से शरीर निरोग बना रहता है।

तीसरा कारण : जब कोई मुमुक्षु आत्मा परमात्मा के ध्यान का प्रारम्भ करता है तब प्रारम्भ में उसे लाल रंग (भगवा रंग) जैसा प्रकाश दिखाई देता है। आत्मदर्शन का प्रारम्भ भगवान रंग की किरणो से होता है अर्थात् ध्यान की सतत जागृति का दर्शक भगवा रंग है।

चौथा कारण : सूर्य की किरणो में सात रंग होता है जिसे शास्त्रोने तथा वैज्ञानिकोने स्वीकार किया है। सूर्य का सात रंग पृथ्वी के साथ रंग से प्रभावित होता है। सामान्य रीति से सात रंग होते हुये भी सूर्य की किरणें सफेद रंग में दिखाई देती है। फिर भी सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय सात रंग दिखाई देता है। अथवा वर्षाऋतु में आकाश में सात रंग वाली इंद्रधनुष दिखाई देती है। यह भी सूर्य की सात किरणे ही है।

सात रंग से भरपूर पृथ्वी पर जब सप्तरंगी सूर्य की किरणे पडती है तब ऐसी प्रतिक्रिया होती है कि जिस किरण पर जिस कलर की किरण पडती है वही रिकलेक (परिवर्तित) होती है अर्थात् लाल कलर पर सूर्य की किरणो में जो लालरंग की किरण जब पड़ती है तब रिफलेक (परिवर्तित) होकर लाल रंग या लाल रंग के वस्त्र पर पड़ते ही प्रभाव शून्य हो जाता है। रंग सामान्य हो जाता है अर्थात् रंग प्रभाव कम हो जाता है कारण यह कि लाल रंग उग्र स्वभाव वाला है। अग्नि तत्व का प्रतीक है, इसके अलांवा लाल रंग रजोगुण वर्धक है। इस के साथ ही लाल रंग कामनाओं का बर्धक है। जो शरीर में रहने वाली महेच्छाओं को वेग देनेवाला होता है । यह सब साधु-सन्यासी के लिये विपरित दिशावाला बताया गयै है । इसीलिये तो कहा जाता है कि भगवा वस्त्र पहनना अर्थात् भगवान को प्राप्त करने की प्रतिज्ञा करनी तथा दुनियाकी आशा छोड़ना।

पांचवां कारण : भगवा पहरना अर्थात् अग्नि परिक्षा में से पसार होना।

छठा कारण : यह कि लाल रंग पर किसी की खराब - विकृति-मलिन असर नहीं होती -बल्कि उसका प्रभाव परिवर्तित हो जाता है। अच्छे प्रसंग में कुमकुम का टीका किया जाता है। उस में भी साधवा स्त्रियां को सदा मस्तक पर कुमकुम करने का विधान है। ईसिलिये तो श्रीहरिने अपने संप्रदाय में प्रत्येक आश्रितों को कुमकुम करने की आज्ञा की है। तिलक करने की भी आज्ञा की है। कुमकुम करने वाले के ऊपर किसी की खराब असर नही होती, नजर नही लगती । प्रवास के समय कुमकुम करके निलकने का नियम है।

सातवां कारण : लाल रंग मंगल का रंग है। मंगल अति उग्र ग्रह है इसीलिये ज्योतिष में श्रद्धा रखने वाले मंगलवार को लाल वस्त्र पहनकर मंगल के दोष को शून्य करने का प्रयास करते हैं । इसके अलांवा वैष्ण वकी पूजा में मंगलवार को ठाकुरजी को लाल वस्त्र धारण कराया जाता है।

अभी-अभी अमेरिका में संशोधन हुआ है कि व्यापार - मार्केट में कैसी पैकिंग वाली वस्तु का अधिक धंधा चता है । अन्त में यह निर्णय आया कि लाल रंग की पैकींग वाली वस्तु का डबल भाव आता है। इसीलिये तो भगवान वस्त्र धारण करने वाले कभी भूखे नहीं मरते।

श्रीजी महाराज ने संतो के पूर प्रकरण बदलने के बाद भगवा रंग के वस्त्र पहरने की आज्ञा की थी । इसी तरह सांख्ययोगी बहनों को भी लाल रंग के वस्त्र पहनने की आज्ञा की है।

सकारात्मक ऊर्जा का स्थान मंदिर

- साधु देवस्वरुपदास (जयपुर)

परमेश्वर की प्रसन्नता के लिये भक्ति तथा उपासना श्रेष्ठ माध्यम है। इससे सरल कोई साधन नहीं हो सकता। योग, ज्ञान, उपासना ये तीनो साधन भक्ति के मार्ग में सरल बताये गये हैं। जब कि भक्ति का मार्ग तो बालक, स्त्री, पुरुष, युवान, वृद्ध, रोगी, निर्बल, अपंग, निराधार, निर्धन इत्यादि सभी के लिये मनुष्य मात्र के लिये जाति पांति के भेदभाव से रहित बताया गया है। साक्षर या निरक्षर मनुष्य इस भक्ति के मार्ग में प्रवासी बनकर ईश्वर का साक्षात्कार कर सकते हैं। योग के मार्ग में या ज्ञान के मार्ग में कुछ लोग ही जा सकते हैं। लेकिन भक्ति के मार्ग में कोई भी जा सकता है। इसमें किसी प्रकार का अधिकारी जा सकता है। भक्ति के मार्ग में स्वयं परिपक्वता आ जाती है। पापी हो या पुण्यशाली हो दोनों भक्ति करने के अधिकारी होते हैं। जिस तरह पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश इन सभी पर सभी का अधिकार है, उसीतरह ईश्वर पर जीव मात्र का अधिकार है। भक्ति ही भगवान का स्वरुप है। इसलिये सभी को भक्ति करने का समान अधिकार है। भक्ति के मार्ग पर चलने के लिये भारत में मंदिर को भी एक साधन बताया गया है। भगवान स्वामिनारायण का एक सिद्धान्त था कि देश-विदेश में गाँव-गाँव में मंदिर बनाया जाय जिससे लोग उस मंदिर के माध्यम से भजन-भक्ति समूह में कर सकें। मंदिरों में भजन भक्ति का एक अनुकूल वातावरण मिलता है। कितने लोगों के मन में होता है कि मंदिर क्यों ?

मंदिर में बहुत सारी ऐसी वस्तुयें होती है जो सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती हैं। जब हम मंदिर में जाते हैं तब उस ऊर्जा का प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। इससे मानसिक शांति का अनुभव होने लगता है। दुनियामें कहीं जब शान्ति न मिलती हो तो मंदिर चले जाना चाहिये। वह मंदिर छोटा हो या बड़ा हो वहाँ जाने मात्र से शांति मिलने लगती है। सभी प्रकार की चिन्ता दूर हो जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि मंदिर में एक कोई विशेष सकारात्मक ऊर्जा होती है। इन मंदिरों में कोई एक ही विशेष कारण नहीं होता बल्कि अनेकों कारण होता है, जिसमें प्रथम कारण यह है कि भगवान के स्वरुप का दर्शन होते ही मन प्रफुल्लित हो उठता है सभी समस्याओं का समाधान होते दिखाई देने लगता है। जो भी अपना कर्म है उसे हम समाज में छिपाते हैं लेकिन भगवान के सामने निवेदन करदेते हैं। इससे भी मन में शांति का अनुभव होने लगता है। मन की बेचैनी दूर हो जाती है। दूसरा कारण यह है कि वास्तु, मंदिर का निर्माण वास्तु को ध्यान में रखकर किया जाता है। इससे मंदिर में जाते ही हकारात्मक ऊर्जा मिलने लगती है। तीसरा कारण यह कि जो भी मंदिर में जाता है वह अपने मन में सकारात्मक विचार लेकर जाता है और विश्वास लेकर जाता है जिससे मनोबल दृढ होने से उसे सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। चौथा कारण यह है कि मंदिर में शंख नाद, घंटानाद इनकी आवाज में वातावरण शुद्ध होता है और मन पर गहरा तथा एकात्मभाव का असर पड़ता है।

पांचवा कारण यह कि मंदिर में सुगन्धित अगरबत्ती से वातावरण मनोरम हो जाता है, शुद्ध हो जाता है। छठ्ठा कारण यह कि - भक्तों द्वारा निरन्तर भजन-कीर्तन से वातावरण में दिव्यता प्रगट होने लगती है। मंदिर में बहुत सारी ऐसी वस्तुयें होती है जो वातावरण को सकारात्मक ऊर्जा में परिणत कर देती हैं। हम जब मंदिर में जाते हैं उस समय मन तथा आत्मा में शान्ति का अनुभव होने लगता है।

अपने गाँव में छोटा मंदिर क्यों न हो लेकिन उस मंदिर में प्रतिदिन जाना चाहिये। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करना चाहिये। इससे मंदिर की उपयोगिता सिद्ध होगी। मंदिर के निर्माण का पुरुषार्थ सार्थक होगा। मंदिर में जाने से दैनिक क्रिया में सन्तुलन बन जाता है। इससे तन, मन, धन तीनों प्रभावित होते है बाद में आदमी तीनों से सुखी होने लगता है। इसलिये मंदिर में प्रतिदिन जाने का नियम रखें साथ में अपने बालक को भी लेजांय।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वचन

नारायणघाट मंदिर

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

ता. १-१-१२ रविवार को तीर्थभूमि नारायणघाट मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से अलौकिक शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर संत-हरिभक्त की एक दिव्य सभा का आयोजन किया गया था । सभा में अनेकों हरिभक्त विद्वान संतो की अमृतवाणी सुन रहे थे । प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वचन के प्रारंभ में कहा कि सभा में बैठे भक्त थोड़ा आगे आजांय पीछे बहुत सारे भक्त खड़े है । किसी के लिये जगह देना भी परोपकार से कम नहीं है । आज प्रातः हम अपनी आफिस में बैठे थे एक भक्त आकर कहे कि कुछ भक्त भगवान नरनारायणदेव के सामने से हटते ही नहीं है । दूसरे को दर्शन का लाभ ही नहीं मिलता । भगवान का कोई दर्शन करता हो तो उसे हम कैसे हटा सकते हैं । दूसरा कोई दर्शन कर रहा होतो उसके लिये जगह कर देनी चाहिये । आप दर्शन करलें तो दूसरे भी दर्शन का लाभ लें इसका सदा ध्यान रखना चाहिये । किसी को श्वास लेने देना भी एक धर्म कार्य है ।

महाराज शाकोत्सव का प्रारम्भ लोया से किये । लेकिन आज श्री नरनारायणदेव के देश में एक वर्ष जितना शाकोत्सव होता है उतना पूरे देश में पांच वर्ष में भी सम्भव नहीं है । यह अपने लिये गौरव की बात है । हमें तो इसका विसेष गौरव का अनुभव होता हैं । महाराज के जो भी आश्रित हुये हैं उन्हें अन्नवस्त्रादि की कमी नहीं होगी ऐसा उन्होंने वचन लिया है । आज हम जो सुखी हैं तो महाराज के वचन से सुखी है ।

दो समय सभी को पर्याप्त भोजन मिलता ही है । अर्थात् किसी को यहाँ शाकोत्सव में रोटी-शाग खाने की आवश्यकता नहींहै । परंतु शाकोत्सव में प्रसाद के रुप में भोजन करने को मिलता है यह सबसे बड़ी कीमत है । प्रसाद ज्यों ही मुख में जाता है अन्तःकरण तुरंत निर्मल बन जाता है । अच्छे विचार आने लगते है । आज आपलोग महाराज के प्रसाद को बड़े प्रेम से ग्रहण कीजियेगा ।

अपना यह उत्सव अपने सत्संग परिवार को पारिवारीक भावना से जोडने का कार्य करता है, विचारो में दृढता आती है । सभी मिलकर उत्सव का आयोजन करते हैं । सेवा करते हैं । एक साथ बैठकर प्रसाद ग्रहण करते हैं । आज - ऐसा हो रहा है कि एक कुटुम्बर जहाँ एक रक्त का सम्बन्धहै वहाँ भी एक साथ बैठकर भोजन नहीं करते एक साथे बैठकर वात-चीत भी नहीं करते ।

महाराज पृथ्वी पर पधारे उसमें भी अहमदाबाद की भूमि जहाँ पर महाराज ने सर्व प्रथम मंदिर बनवाये, नरनारयणदेव को प्रतिष्ठित किये प्रतिष्ठित करते समय कहे कि हमारे तथा श्री नरनारायणदेव में लेशमात्र भी अन्तर नहीं है । इन्ही में रहकर हम सभी के मनोरथ पूर्ण करेंगे । इस लिये आज सभी श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय रखना । मैं कईबार कहता रहता हूँ कि यदि एक माला आप कम फेरोगे तो चलेगा लेकिन श्री नरनारायणदेव का दृढता से आश्रय रखोगे तो महाराज आप का कल्याण अवश्य करेंगे । मुक्तानंद स्वामी ने आरती में गाया है कि ''अडसठ तीरथ चरणे कोटि गया काशी'' । इस तरह यथार्थ का ख्याल तब आता है जब आप अन्यत्र से भटक कर थक जाते है और फिर यहां आने पर आत्मिक शान्ति मिलती है और यह अनुभव होता है कि जो कुछ है वह यहीं है । महाराज ने २७३ वचनामृत में कई बार श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य प्रेम से

कहा है।

यह नारायणघाट मंदिर जब बन रहा था उस समय असारवा जहाँ हम पहले रहते थे वहाँ से निकल कर इसी सुभास ब्रिज से होकर मैं अपने स्कूल जाता था, अर्थात् यह हमारा प्रतिदिन का रास्ता। उन दिनो मैं देखता था कि गवैया स्वामी पांच-सात हरिभक्तों को साथ रखकर खूब परिश्रम करके, स्वयं पत्थर उठाकर इस मंदिर का निर्माण करवाये। कई बार जब कोई हरिभक्ति नहीं होते तो स्वयं अकेले ही श्रम करते रहे। उसके बाद इस मंदिर के विकास में अनेकों संत हरिभक्त सहभागी हुये हैं। आज देव स्वामी, पी.पी. स्वामी इत्यादि संत मंदिर का विकास कर रहे हैं। इस मंदिर में एक कार्य करना रह गया है वह यह कि मंदिर के प्रदक्षिणा का भाग। इस प्रदक्षिणा भाग को बनाना इसलिये जरुरी है कि हरिभक्त लोग वरसात में भीगते है और कोई तो फिसलकर गिर भी जाता है। इसी तरह गर्मी के समय प्रदक्षिणा करते समय पैर जलने लगता है। इन्हीं कई कारणो से प्रदक्षिणा का छत बनाना आवश्यक है। जब भी संत प्रदक्षिणा का छत बनाने का कार्य करें आप सभी उसमें सहयोग अवश्य करेंगे। हम सभी इस मंदिर में विराजमान प्रभु की कृपा से सुखी हुये हैं। हम अपनी बुद्धि से कभी सुखी हो ही नहीं सकते। कारण यह कि हम अपनी बुद्धि बल से कोई कार्य करते है तो कोई न कोई कमी रह ही जाती है।

सेवा का मतलब यह नहीं कि लाख-करोड रुपये दान देना ही सेवा है। सेवा तो आत्मभाव से शारीरिक, मानसिक, आर्थिक सेवा सेवा है। सेवा भावना के साथ जुड़ी है। पांच रुपये दिये हों या एक पत्थर उठाकर मंदिर में रखे हो तो जब प्रभु का दर्शन करने आयेंगे उस समय आपके मन में अपनेपन का भाव आयेगा। श्री नरनारायणदेव मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव प्रभु के सामने जो प्रसादी का स्तम्भ है उसके विषय में हम सभी जानते हैं। इसलिये उसकी सम्पूर्ण बात नहीं कहते परंतु संक्षेप में कहता हूँ, एक किसान भक्त जब अपनी गाड़ी में रखकर इस विशाल शिला को मंदिर ला रहा था तब उसके एक बैल का पैर टूट गया और उसकी जगह स्वयं अपने स्कन्धपर गाड़ी का जुआठ (धूसरी) रखकर मंदिर तक ले आया। इस बात को आनंदानंद स्वामी ने महाराज से कही, महाराज उस भक्त के उपर बहुत प्रसन्न हुये। उस पत्थर की शिला से भेंटे और वचन दिये कि जो भक्त श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने आया हो और देव दर्शन न हो पाया हो, श्री नरनारायणदेव का शयन हो गया हो तो उस समय हमारी प्रसादी के पत्थर को पग लग कर जायेंगे तो उन्हे देव दर्शन का पूर्ण फल मिलेगा। यहाँ पत्थर की कीमत से अधिक भक्त की सेवा-समर्पण की भावना के कारण वह पत्थर श्रीजी महाराज के स्पर्श से दिव्य हो गया है। वर्तमान में ऐसी सेवा करनी भी नहीं है। परंतु मंदिर की सेवा में छोटी बड़ी जो भी सेवा हो प्रेम से करते हैं तो महाराज प्रसन्न होते हैं। हम प्रदक्षिणा न कर सकते हों, माला फेर न सकते हों, यदि कोई प्रदक्षिणा फिरता है और माला फेरता हैं तो उस के इस कार्य में विघ्न न करें सहायक बनने से भी आधा फल मिलता है।

कोई भक्त माला फेरता हो, गर्मी पडती हो, ऊपर पंखा बन्द हो, उस समय आप खड़े होकर स्वीच चालू करके पंखा चालू कर देते हैं तो यह भी सेवा ही है। कितने लोग चालू पंखा को बन्द कर देते हैं। स्वयं माला न फेरे लेकिन जो करते हों उन्हें विघ्नरुप तो न हों। कितने लोग कहते हैं कि इतने मंदिरों की क्या आवश्यता ? तो मंदिर के माध्यम से संस्कार का सिंचन होता है। आज हजारो बड़े बड़े विद्यालय लाखो-करोडो रुपये की फीस लेकर विद्यार्थियों को शिक्षण दे रहे हैं। परंतु विद्यार्थी स्नातनक यास्नातकोत्तर के बाद भी संस्कार हीन ही रहते हैं। यदि विद्यालयों में संस्कार मिलता होता तो कल ३१ दिसम्बर को रात्रि में पोलिस को इतना कोम्बिंग नहीं करना पड़ता। कोलेज में या अन्य जगहों पर संस्कारो के लिये बड़े - बड़े कार्यक्रम किये जाते हैं। फिर भी हम देखते हैं कि उसका कोई परिणाम नहीं आता। जब कि अपने मंदिरों के माध्यम से यह कार्य सरल हो जाता है। मंदिर में आकर भगवान को पहचाने, सत्संग करे, किसी अच्छे हरिभक्त का उसमें गुण आवे तो भी महाराज उस जीव का कल्याण करने वाले हैं। गृहस्थ अपने बेटा-बेटी को यदि मंदिर में लाते हैं तो उनका भविष्य उज्जवल है लेकिन जो गृहस्थ अपने माता पिता को भी मंदिर लाते हैं तो उनका गृहस्थाश्रम धन्य है। उनका जीवन सार्थक है।

इतना कहकर सभी सत्संगियों को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

अभिप्राय

यह म्युजियम एक अजोड़ तथा अद्वितीय संग्रहालय है । जिस में ८ नं हाल में श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके जो हृदय में आनंद की अनुभूति होती है वह अवर्णनीय है। इस जन्म में या पूर्वजन्म में जो भी पाप हुआ हो वह जलकर राख हो जाता है। आज मैं प्रथमवार दर्शन करने आया हूँ। विगत दो वर्षो से छ वार कैन्सर का आपरेशन करा चुका हूँ। अभी एक महीने पहले आपरेशन कराये हैं आज ८ नं. के होल में श्री नरनारायणदेव का दर्शन करते ही मेरी सभी पीड़ा दूर हो गयी। जयश्री स्वामिनारायण। (पटेल जगदीशभाई गांडाभाई)

Its Been a Year Already Cant Be live It gives us a warm feeling, a life-long Dream of yokes has come True the Peashadi in vastu of Bhagwan names us feel even close to Bhagwan thank you for giving the Satsangis this opportunity. The Architect is well Constructed and the museum just Blows you away with It's Greatness. One day is not enough. when we cone to Ahmedabad, the Museum will Always be on top of the list.

The Museum gives us a warm Feeling & Makes us Forget our worries us This Museum Beats any other Museum in the UK, It will Always be Special to us.

(Kantibhai, Dhanuben, Vanisha, Bhavesh, Dhiresh, Mital, Vyan & Bhavya Halai - London(UK))

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण इस लोक में पदार्पण करके अपनी मानुषी लीला के समय विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बनवाये। इसी तरह प.पू. बड़े महाराजश्रीने संप्रदाय का तथा विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण म्युजियम अहमदाबाद में बनाकर अनेक आत्माओं का अकल्पनीय उपकार किया है। यहाँ पर श्रीहरि के प्रसादी की वस्तुयें एकत्रित की गयी है वह अन्यत्र चौदहों भुवन में या सारे ब्रह्मांड में कही नहीं मिलेगी। यह म्युजियम दिव्य अलौकिक तथा उदारहणीय बना है। दुनिया के सभी आश्चर्यो में एक आश्चर्य के रुप में यह म्युजियम है। प.पू. बड़े महाराजश्रीने "न भूतो न भविष्यति" ऐसा कार्य किया है। इसके लिये प.पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में कोटि कोटि वन्दन के साथ जयश्री स्वामिनारायण। (लालजी आर. ठक्कर-बापूनगर)

प्रवेश करने के साथ एक दिव्य अनुभव हुआ जिसका वर्णन सम्भव नहीं। जो अनुभव का विषय होता है वह वर्णन में अशक्य है। जो हुआ वह जीवन का अलभ्य प्रसंग रहा। (कुन्दन बहन जगडा-राजुला) निष्कुलानंद स्वामी के भक्त चिंतामणी ग्रन्थ का सभी प्रसंग यहाँ पर दिव्य अनुभव में दृष्यगोचर हुआ है। (डॉ. उरला अग्रवाल, दिल्ही)

म्युजियम देखकर हमारे तथा हमारे परिवार के हृदय में दिव्यता का अनुभव हुआ। इसके साथ ही श्री नरनारायणदेव के मौन मंदिर में जो कुछ हम संकल्प किये वह भगवान स्वामिनारायण की इच्छा से पूर्ण हो गया।

जैसे मेरी बहन के अभ्यास में सी.ए.सी. परीक्षा में दो बार अनुत्तीर्ण हुई, लेकिन जब यहाँ आकर संकल्प की तो दूसरी बार में उत्तीर्ण हो गयी। इसके अलांवा अन्य व्यहारिक काम में मनोकामना पूर्ण हुई है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान देने वालों की नामावली (मार्च-२०१२)

- रु. ५०,०००/- बलदेवभाई लालदास पटेल झुलासणवाला संकल्प के अनुसार वेतन जमा कराये - अहमदाबाद
- रु. ३०,०००/- भानुबहन सुरेशकुमार पटेल - बापूनगर
- रु. २५,०००/- अ.नि. शान्ताबहन खीमजीभाई पटेल (मेडा) अहमदाबाद कृते रतीभाई तथा गोविन्दभाई
- रु. १५,०००/- घनश्याम इन्जिनियरिंग ईन्डस्ट्रीझ - अहमदाबाद वती कौशिकभाई जोषी
- रु. १२,०५१/- ट्रस्टी - रतिभाई - मेडा माताजी शान्ताबा के श्रद्धांजलि हेतु।
- रु. ११,१११/- परेशकुमार रामभाई पटेल - वती पूनमभाई - सुणाव।
- रु. ११,०००/- आत्मारामभाई शंकरभाई पटेल - राणीप - वती जयेन्द्रभाई ए. पटेल
- रु. ११,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर सतसंग समाज (चौधरी) माणेकपुर
- रु. ६,००१/- एक हरिभक्त बहन (सोने की कान की कडी श्री नरनारायणदेव के बोक्स में अर्पण की।
- रु. ५,००१/- एक हरिभक्त बहन (सोने की कान की कड़ी श्री नरनारायणदेव के बोक्स में अर्पण की)
- रु. ५,००१/- अ.नि. शान्ताबहन लवजीभाई सोलंकी - ठक्कर नगर अंतिम संकल्प के निमित्त भेंट।
- रु. ५,००१/- पटेल मीनाबहन प्रवीणकुमार शांतिलाल केनेडा के लिये बीजा मिला।
- रु. ५,०००/- अ.नि. दूची बहन मोहनभाई पटेल - जूनावाडज कृते - धवल अरविंदभाई पटेल
- रु. ५,०००/- महेशभाई एस. पटेल - लालोडावाला-वापी।
- रु. ५,०००/- हितेन्द्र एम. दरजे (एडवोकेट) - घाटलोडिया।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की सूची (मार्च-२०१२)

ता. ८-३-१२	विरेन जनार्दनभाई देसाई, ओस्ट्रेलिया	ता. २५-३-१२	श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल - मारुसणा वती माधाभाई पटेल । (स.गु.शा.स्वा. हरिस्वरुपदासजी के स्मरणार्थ एवं गु.स्वा. निरंजनदासजी के स्मरणार्थ)
ता. ११-३-१२	वर्षाबहन अश्विनभाई सुखभाई सोनी, सायलावाला		
ता. १३-३-१२	जयेन्द्रभाई आत्माराम पटेल - डांगरवावती - उदयनभाई महाराज।		
ता. १४-३-१२	चौधरी मूलजीभाई सेंधाभाई - माणेकपुर वती जीवनबहन, अमीत	ता. २९-३-१२	पटेल शैलेषभाई गोविन्दभाई - मोखासण

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com ● **email:swaminarayanmuseum@gmail.com**

सत्संगबालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवान के चरित्र कल्याणकारी है

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

अजबलीला है अलबेला की । भक्त भगवान के लिये इमली के वृक्ष पर झूला डालता है और उन्हें झुझाता है । वसंत ऋतु का अभी आरम्भ ही हुआ है कि महाराज झूले पर झूलते हुये संतो के साथ आनंद करते हुये कहते हैं कि इस वार का वसंतोत्सव डभाण में मनायेंगे । इसलिये आपलोग किंसुक का फूल तथा गुलाल अधिक मात्रा में तैयार रखियेगा । फाग के लिये खजूर तैयार रखना । इस वार जो रह गया उसे पुनः ऐसा अवसर नहीं मिलेगा । वसंतऋतु सभी ऋतुओं का राजा है । इस ऋतु में चारो तरफ हरियाली ही हरियाली रहती है । सुगंधमय वातावरण पुष्पाच्छादित वृक्ष चारो तरफ दिखाई देते हैं । की कविराज दलपतराम ने नाना प्रकार के खिले पुष्पों का वसंतऋतु के दिनों के अवसर आने पर वर्णन किया है।

रुडो जुओ आ ऋतुराज आव्यो ।
मुकाम तेणें वन मं जमाव्यो ।
तरुवरो ए शणगार किधो ।
जाणे वसंत शदपाव दिधो ॥

फूलों से लदा हुआ वृक्ष मानो माथे पर पगड़ी बांधकर सुशोभित हो रहा हो ? ऐसे मनोहर समय में संत तथा हरिभक्त किंसुक के रंग तैयार रखे थे । गुलाल तो भर भरके तैयार थे । सभी महाराज के पास आये । महाराज ने प्रसादी के गुलाल का स्पर्श किया । बाद में पिचकारी भर भरकर हरिभक्तों के ऊपर किसुंक पुष्प के रंग को छोड़ने लगे । गुलाल को ऊपर फेंकने लगे । प्रभु की इस लीला को देखने के लिये देवता लोग आकाश में खड़े थे । दुंदुभी तथा अन्य वाद्ययंत्रो को बजाते हुये पुष्पवृष्टि करते प्रभु का दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे । उत्सव पूर्ण करके महाराज स्नान करने पधारे । २२ से २५ घंटे पानी से स्नान किया । इस दृश्य को देखकर भक्तों के आनदं की सीमा न रही । सभी इस दृश्य को अपने हृदय में उतार रहे थे । सभी अपने जीवन को धन्य मान रहे थे । महाराज सभी को अजुरी भर भरके खजूर की प्रसादी दे रहे थे । बाद में सभी संत-भक्त सभा में परिणत हो गये ।

उसी समय मूलजी भाई वणिक श्रीजी महाराज के पास आये, अपने साथ भुज से कनक से मढी बिलोरी कांच जैसी तेजधारवाली ढाल लाये थे । वह प्रभु के चरण में लाकर समर्पण किये, जिसकी कीमत १०० कोरी थी । महाराज के चरण में अर्पण करके हाथ जोड़कर खड़े रहे, इतने में महाराज खड़े होकर अपने छड़ी में से गुप्ती को खींच लिये । सभी विचार में पड़ गये । अब महाराज क्या करने वाले हैं ? इतने में सभी के देखते ही महाराज गुप्ती वाला हाथ ऊपर करके ढाल में गुप्ती को उतार दिये । गुप्ती ढाल में से खींचकर पुनः प्रहार किये जिससे गुप्ती चार अंगुल जितनी ढाल में घुस गयी । इतना चरित्र करके वह ढाल पुनः मूलजी भक्त को वापस दे दिये ।

ऐसी मजबूत तथा कीमती ढाल थी कि कैसा भी लडवैया वीर हो उसके तलवार या गुप्ती की धार को सह सकती है । ऐसी मजबूत ढाल में भी भगवान ने छिद्र कर दिया । ऐसे अलौकिक दर्शन करके मूलजी वणीक ने कहा कि "धन्य है प्रभु ! आपकी लीला का, आपके इस चरित्र से खबर पडी की आप अपने अवतारों में कितनी ताकत के साथ असुरों के साथ लड़े है । धर्म की स्थापना के लिये कितने पुरुषार्थ किये थे । धन्य है प्रभु आपके इस दिव्य स्वरुप को जिसका दर्शन करके हम धन्य हो गये हैं ।

मित्रों ! जिस तरह नारियल भीतर से बाहर मीठा और उपयोगी होता है उसी तरह भगवान का चरित्र भी सार्वजनिक उपयोगी स्मरणीय होता है । सभी चरित्र कल्याणकारी बताया गया है । ऐसा समझकर जो श्रवण, मनन, कीर्तन, वांचन करता है उसका सदा सर्वदा श्रेय होता है ।

●

भक्त रक्षा

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

मद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति मद्भयात् ।
वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निः मृत्यश्चरति मद्भयात् ॥

गीता का यह शब्द मानो चतिरार्थ हुआ हो ऐसी सुन्दर बात है । अद्भुतानंद स्वामी ने खोलड़ियाद गाँव का एक प्रसंग लिखा है । एकबार उस गाँव के रुडाभाई भक्त के घर भगवान स्वामिनारायण पधारे । उनके घर दो दिन रुके । महाराज के रुकने का समाचार सुनकर सभी भक्त दर्शन के लिये आने लगे । जो भी प्रभु का दर्शन करने आता सभी के

रहने की व्यवस्था तथा भोजन की व्यवस्था रुडाभाई करते। दूसरे दिन रुडाभाई से महाराज ने पूछा कि आप हमारी भजन करते हैं? आप घर की चिन्ता करते हैं? यह दुष्काल का वर्ष है।

'ओगणोतरा में भयंतर दुष्काल पड़ा हुआ था। एक बूंद भी वरसात कहीं पड़ी नहीं। उन दिनों यंत्र युग नही था। वाहन व्यवहार नहीं था। इससे बाहर से अन्नादिक आना असम्भव था। कोई व्यापारी माल समान लाने के लिये तैयार ही नहीं होता। इसमें कारण यह होता कि यदि कोई बैल गाडी में भरकर अन्यत्र से सामान लेकर आवे और लूटपाट हो जाय ऐसा दु:साहस करने को कोई तैयार नहीं था। ऐसी दुर्गती की स्थिति उन दिनो थी।

श्रीजी महाराजने कहा हे भक्त ! अब आप क्या करेंगे ? घर में अनाज भरें हैं कि नहीं ? महाराज ! पूरे वर्ष चले ऐसा तो नहीं है। महाराजने पूछा कि आप के घर मेंएक वर्ष का खर्च कितना है। महाराज ! एक वर्ष में पाचं कलश जितना खर्च है। पुन: महाराजने पूछा कि आपके घर में संग्रह कितना है। महाराज एक कलश अनाज ही घर में है। इतना अनाज पूरा होजाय तो बाद में क्यां करोंगे। यह सुनते ही रुडा भक्तने कहा महाराज ! हमें थोड़ी भी चिन्ता नहीं है। हाँ, कुछ करना अवश्य पड़ेगा। करना क्या होगा ? बस आप अक्षरधाम में से लेने अवश्य आना। अक्षरधाम में अनाज कभी खत्म ही नही होगा। श्रीहरि हंसने लगे। रुडा जी एक काम करो, आप घर के गहने बेंच दो और अनाज घर में भरलो। गहने हमारे घर में कहाँ से आयेंगे। नगद रुपयें हो तो महंगा अन्न भी लेकर घर में रखलीजिये। महाराज ! रुपये भी घर में नहीं है।

श्रीजी महारज कहने लगे कि एक काम कीजिये, आप मेरे साथ चलिये। वापस आते समय लोया चलेंगे और सुराखाचर के खेती सम्हालने की बात करते आयेंगे। हम कहेंगे तो आपकी व्यवस्था हो जायेगी। लेकिन महाराज ! हम तो कभी किसानी का काम नहीं किये हैं। राजपूत है, हमारा जीवन कुछ और ही रहा है। हमें यह सबकुछ नहीं आता। तो आप क्या करेंगे। महाराज आप केवल अन्तिम समय में लेने आयेगे। अब हमारा एक कलश का अनाज खत्म हो जायेगा तो आप हमें लेने आइयेगा और हम तैयार रहेंगे आपके साथ अक्षरधाम में जाने के लिये। लेकिन भगवान की चाहना थी कि भक्त जीवन रहे।

पुन: महाराज ने पूछा आपके पास खेत तो हैं न लेकिन महाराज हमारा नहीं है. एक राजपूत की ५० बीघा जमीन है, उसी की खेती करता हूँ। उसमें आप कुछ लगायें है। हा बाजरी लगाये हैं। थोड़ा वरसाद हुआ और सभी बाजरी बोये तो हमने भी बो दिया लेकिन वरसात न होने से बाजरी सूख गयी। आपके आने से हम खेत में नहीं गये। महाराजने कहा आपका खेत कितना दूर है। महाराज गाँव से बाहर निलकते समय रास्ते में आता है।

महाराज दूसरे दिन चलने लगते हैं, सभी लोग बिदाई करने आते हैं। भगवान खड़े होकर वहीं से सभी को रोककर आगे बढते हैं। केवल रुडा भगत को कहते हैं कि आप मेरे साथ आइये। स्वयं माणकि घोड़ी पर धीरे धीरे सवारी करके चलते रहे और भक्त नीचे से वात करते हुये चल रहे थे। थोड़ा दूर जाने पर एक खेत आया, महाराजने कहा कि यह क्या ? महाराज, यही बाजरी है सूख गयी है, इसी तरह मेरी बाजरी भी सूख गयी है। यह हरी अब नहीं होगी ? हो सकती है बरसात हो जाय तो इसमें से नये पत्ते निकल सकते हैं।

बात करते करते रुडा भक्त को तीन गाँव जितना चलाये इसका एक रहस्य था। भगवान का सानिध्य कल्पवृक्ष के समान है। यदि भगवान के साथ रहना सीखें तो सभी दु:ख क्षण भर में दूर हो जाय। हमें भी भगवान के साथ रहना हो, भगवान के साथ चलना हो तो क्या करना चाहिये। हमें भी यहभाव रखकर माला फेरना चाहिये, मानसी पूजा करनी चाहिये, धुन करनी चाहिये। कथा सुनते समय यह समझना चाहिये कि हम भगवान के पास बैठे है। भगवान की आज्ञा का पालन करें तो यह समझना चाहिये कि हम भगवान के साथ चल रहे है।

रुडा भक्त को अपने साथ चलने के बाद महाराजने कहा कि आप हमारे साथ इतना चलकर तप किये अब घर जाइये। रुडा भक्त अपने घर गये। दूसरे दिन प्रात: होते ही चारणपद गाँव से एक ब्राह्मण आ रहे थे। उन्होने देखा कि केवल एक ही खेत में पानी वरसा है, जिसमें रुडा भक्तने बाजरी बोई थी।

चारणपद के भूदेव रुडा भगत से आकर कहे, भगत ! आपके खेत में बडा आश्चर्य देखकर आ रहा हूँ, जो भूतो न भविष्यति। आप के खेत में वरसात हुआ है, अन्यत्र कहीं नहीं, सभी जगह सूखा है। यह समाचार मिलते ही सम्पूर्ण गाँव रुडा भगत के खेत को देखने उमड पड़ता है। वहाँ जाने के बाद सभी को यह आश्चर्य देखकर यह निश्चित हो जाता है कि भगवान स्वामिनारायण के अलांवा रुडा भगत के खेत में वरसात कौन कर सकता है।

रुडा भगत को हुआ कि अब हमें यह जानना जरुरी है कि

पेईज नं. १७

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचनमें से -
"कथा-जीवन में बदलाब लाती है"
- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

कलियुग में कथामृत काल रुपी सर्प के मुख में अमृत के समान है। कलियुग में संसाररुपी सर्प जीव के पीछे पड़ा हुआ है। संसार में मन फंसे नहीं इसके लिये परमात्मा ने कथामृत प्रदान किया है। जब-जब विकार-वासना का स्पर्श होता है तब-तब भगवान की कथा या नाम स्मरण करने से वासनारुपी जहर स्पर्श नहीं कर सकता है। जो मनुष्य कथा या नाम स्मरण करता है। उसे विषय वासना कभी स्पर्श नहीं करती। कथा वक्ता को शुकदेवजी महाराज की तरह धीर गम्भीर होना चाहिये। जैसे कथा वक्ता होते है वैसी ही उनकी वाणी का प्रभाव रहता है। ऐसे वक्ता की वाणी गंगा के प्रवाह की तरह निर्मल होती है। आत्मा के साथ तादात्म्य सम्बन्धकराने में सहायक होती है। श्रोता के मन को त्वरित स्पर्श करने वाली वाणी होती है। जिज्ञासु-श्रोता कथा श्रवण के बाद मनन और निदिध्यासन अवश्य करें। यदि शुद्ध मन से तथा दृढ भाव के साथ सुनीजाय तो जीवन में परिवर्तन ला देती है। कथा सुनने वाला यदि कथा एकाग्रमन से सुनता है तो निश्चय ही उस कथा के प्रवाह में चित्त स्थिर हो जाता है। जीवन में कल्याण कारी विचार आते हैं। मनुष्य का अहंकार नष्ट होने लगता है। मात्र कथा सुनने से ही कल्याण नहीं होता। कथा सुनने से पुण्य मिलता है। कथा सुनने से तथा उसे जीवन में उतारने से कल्याण होता है। श्रीजी महाराज ने सारंगपुर के तीसरे वचनामृत में कहा हैं कि भगवान का दर्शन करके तथा कथा वार्ता को सुनकर जो उसीका मनन एवं निदिध्यासन करता है निश्चित वह परमात्मा का साक्षात्कार करलेता है। श्रवण, मनन, निदिध्यासन किसे कहते है। श्रीजी महाराज ने कहा कि "जो कान से कथा सुनीजाय उसे श्रवण कहते हैं। जिस कथा को सुनकर वारंवार उसी का चिन्तन करना ही मनन है। जिस कथा को निरन्तर चिन्तन-मनन करके वारंवार उसी का अभ्यास करना ही निदिध्यासन है। मनन निदिध्यासन के विना मात्र श्रवण से प्रभु का साक्षात्कार नहीं होता। यदि भगवान के स्वरुप का दर्शन करके उसी का मनन-निदिध्यासन न करे तो लाखो वर्ष वीत जांय तो भी स्वरुप का साक्षात्कार नहीं होता। मनुष्य अपनी भूल को स्वीकार नहीं करता, यदि कदाचित भूल स्वीकार करभी ले तो उसे छोड़ नहीं सकता। लेकिन ऐसे व्यक्ति को स्वदोष का ज्ञान रहता है। इसलिये कथारुपी गंगा में स्नान करने से मनुष्य का मन शुद्ध होता है। मन के शुद्ध होने के बाद ही कथा जीवन में उतरेगी। आज तो मानव मन को शुद्ध रखने की जगह, शरीर को सजा कर रखता है। मनुष्य क्षण भंगुर शरीर से खूब प्रेम करता है। उसे यह पता नहीं कि यह शरीर एक दिन क्षय होना वाला है। यद शरीर हाड, मज्जा, मांस, रुधिर से वना हुआ एक पिन्ड है। इससे ममता क्या रखना ? शरीर का पोषण हो सके इतना ही शरीर का ध्यान रहे। ईश्वर की प्राप्ति में मनुष्य की शरीर ही माध्यम है। इसलिये कथा का श्रवण, मनन, निदिध्यासन करने से जीवन की सार्थकता कही जायेगीं।

●

उपासना को शुद्ध रखें
- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

भगवान के भक्त को चाहिये की वह भगवान की भक्ति किसी अपेक्षा के विना करे। भगवान के स्वरुप को शास्त्र से या संत सत्संग के माध्मय से जाना जा सकता है। भगवान के स्वरुप में तर्क नहीं करना चाहिये। जिस तरह बालक को बाल्यावस्था से यह ज्ञान हो जाता है कि ये हमारे पिता है और ये हमारी माता हैं यह भाव जीवन पर्यंत रहता है, कभी नष्ट नहीं होता है। जीव एक दूसरे जीव में बद्ध हो जाता है, ठीक इसी तरह उपासक को भगवान के स्वरुप में दृढ निश्चय करके भगवान की उपासना करनी चाहिये। उपासना - उप + आसन, बगल में बैठना अर्थात् परमात्मा के समीप में बैठना ही उपासना है। भगवान के पास पांचभौतिक स्थूल शरीर का भाव त्याग करके मात्र एक निष्ठ भाव से परमात्मा का ध्यान करना चाहिये। मूर्ति के दर्शन में सुख का अनुभव होने लगता है। भगवान स्वामिनारायण सदा साकार एवं मूर्ति के रुप में हम सभी के पास विद्यमान हैं। हम उन्हीं के पास बैठकर उपासना करे इसी में जीवन की चरितार्थता है। उसी परमात्मा का ध्यान चिन्तन, पूजा-पाठ, लीला चरित्रों का गान करना ही उपासना है। अखंड (निरन्तर) प्रभु का चिन्तन-स्मरण हृदय में (अन्तःकरण) में होता रहे ऐसा प्रयास करना चाहिये। इस तरह का दर्शन होने से सभी प्रकार की हृदय की ग्रन्थी टूट जाती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा, राग, द्वेष, अभिमान, मेरा-तेरा इत्यादि जो अहंपना का भाव खत्म हो

जाता है। भगवान के स्वरुप का यथार्थ अनुभव होने से सभी संशय नष्ट हो जाते हैं।

माहात्म्य पूर्वक श्रीहरि की दृढता के साथ उपासना भक्ति के लिये श्रेष्ठ उपाय है। प्रभु के स्वरुप में अनन्य निष्ठा रखकर उपासना करनी चाहिये। ऐसा करने से उपासना जल्दी सिद्ध होती है।

अंक के विना चाहे जितना भी शून्य किया जाय वह प्रयोजन विना का होता है इसी तरह परमात्मा के विना चाहे जितने भी साधन किये जांय सब व्यर्थ के है। वचनामृत मे भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि उपासना अत्यन्त शुद्ध होनी चाहिये। अवतार अवतारी का भेद समझकर उपासना करनी चाहिये। इसलिये पूर्ण पुरुषोत्तम के स्वरुप का यथार्थज्ञान होना आवश्यक है।

भारत देश में बहुत सारे सम्प्रदाय हैं उनमें उपासना का भेद भी बताया गया है। लेकिन स्वामिनारायण संप्रदाय में सात्विक उपासना की बात की गयी है। उपासक अत्यन्त शुद्ध भाव से शुद्ध शरीर से शुद्ध मन से प्रभु का आत्म चिन्तन करे। इसी तरह करने से उपासना जल्दी सिद्ध होती है।

प्रथम उपासक मायिक तत्व की उपाधियो को समझे बाद में परमात्मा के यथार्थज्ञान में दत्तचित्त हो जाय। ब्रह्मभाव को प्राप्त होकर शुद्ध चैतन्य आत्मस्वरुप परमात्मा का चिन्तन करे, इस तह करने में परमात्मा का साक्षात्कार होने लगता है। आत्मा तथा परमात्मा के बीच में माया विघ्नरुप है। सब माया का आवरण है। आवरण को हटाने में मात्र भगवान की उपासना ही एक मात्र साधन है। ऐसा करने से उपास्य वस्तु परमात्मा साध्य वन जाते है। परमात्मा की शरण में जब जीव आता है तब परमात्मा स्वयं माया के आवरण को हटा देते हैं। जीव परम एकान्तिक स्थिति को प्राप्त हो जाता है।

जीवात्मा में शक्ति होती है लेकिन माया विघ्न रुप होकर जीवात्मा को निर्बल बना देती है। जीवात्मा निश्चय तथा उपासना से दृढ होता है। उपासना में दृढता की आवश्यकता है। जब जीव शरणागति स्वीकार करता है तब प्रभु उसके पास स्वयं उसे लेने आते हैं।

शुद्ध सर्वोपरि उपासना समझने के लिये श्रीहरिने गढडा मध्य प्रकरण के १३ वें वचनामृत में बहुत सुंदर निर्णय किया है कि प्रतिदिन वचनामृत का पाठ करना चाहिये जिससे भगवान स्वामिनारायण में दृढता हो। दूसरे किसी अवतार में प्रीति न हो। मात्र अपने इष्टदेव में प्रीति रहे। श्रीजी महाराजने स्वयं उपासना की बात कही है। जो एक ही स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति की उपासना तथा ध्यान करने की समझ अपने जीवन में हो। इसके लिये स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति में ही निष्ठा रखनी चाहिये।

●

सच्चे भक्तों की श्रीहरि करते सहाय

- सां.यो. गीताबा (विरमगाँव)

श्रीजी महाराज की कृपा से भरतखंड में जन्म मिला है। इसलिये अन्तिम श्वास तक भगवान की भजन करनी चाहिये। जिस तरह शरीर के लिये भोजन की जरुरत है ठीक उसी तरह आत्मा के लिये हरि स्मरण आवश्यक है। प्रभु की भजन-भक्ति आवश्यक है। भक्ति प्रतिदिन करनी चाहिये यह कोई एक दिन का विषय नहीं है। आयु पूर्ण होने से पहले प्रभु की प्राप्ति करलेनी चाहिये अन्यथा कब अन्धारा हो जायेगा क्या पता। इस जन्म में या इस के बाद भी लाखो जन्म वीत जांय फिर भी जब तक श्रीहरि की प्राप्ति न हो तब तक माया से रहित होकर श्रीहरि का स्मरण करते रहना चाहिये।

पीवडी की परम भक्ता रुक्माबाई थी। धर्म का नियम पूर्वक पालन करती थी। स्वयं सत्संग करती और दूसरों से भी सत्संग कराती। पुत्री माता के घर कितने दिन रह सकती है? माताने पुत्र का विवाह संस्कार हड़ीयाद के कल्याणभाई के साथ कर दिया। ससुराल में स्वामिनारायण भगवान का कोई महत्व नहीं था। धर्म-नियम का कोई पालन करता ही नहीं था। पानी-वाणी को विना गारे उपयोग करते थे। प्रातः कोई नीति-नियम नही, पूजा-पाठ नहीं। एकादशीव्रत नहीं। केवल नास्तिकता की वात। रुकमबाई को यह अच्छा नहीं लगता था। सत्संग की बात नहीं मानना। सत्संग करना अच्छा नहीं लगता था। सास-पति ननद सभी उसे परेशान करते थे। भगवान को नही मानने थे। प्याज-लशुन इत्यादि रोटी पर आकर रख देते जिससे रुकमबाई छाछ पीलेती थी, उपवास करलेती थी। लेकिन भोजन नहीं करती थी। बिना गारा पानी पीने में देती उसे वे नही पीती थी।

अन्तर में श्रीहरि का स्मरण करती रहती थी। स्वामिनारायण स्वामिनारायण नाम का स्मरण करती रहती। जिस प्रकार पानी के विना मछली नही रह सकती ठीक उसी तरह वे भगवान के विना नहीं रह सकती थी।

मछली का जीवन जल है, भक्त का जीवन भगवान है। भक्त का मन सदा भगवान में रहता है। जिस तरह वृक्ष का मूल

जमीन में रहता है उसी तरह भक्त का मूल भगवान की भक्ति है।

रुकमाबाई का हृदय जब दुःख से भर आता तब अपने आंचल में आंसु वहा लेती लेकिन किसी से व्यक्त नहीं करती थी। एक दिन उनका पति पूजा की पेटी चुरा दिया, माला तोड दिया, जैसे-तैसे भला बुरा बोलने लगा। इतने सब कुछ के बाद भी वे कुछ नहीं बोली और घर का काम करती रही। घर का कोई भी सदस्य प्रेम से नहीं बुलाता था। सभी तिरस्कार करते थे।

एकदिन उसे रुम में बंद कर दिया और भोजन-पानी के विना सात दिन बीत गये। रोते-रोते श्रीहरि का स्मरण करती रही। भगवान का अनन्याश्रय मानकर आत्म समर्पित भाव से कीर्तन गाने लगी -

रंगीला कान छेटे रहेवुं ते बारी न घटे,
रंगीला कान मळ्या विना तो पीडा नव माटे ।
रंगीला कान ब्रह्मानंदनी अरजी ते सांभणो,
रंगीला कान आवी एकान्ते मुंजने मणो ॥

हे प्रभु हमारी प्रार्थना को सुने, मेरे दुःख को दूर करें। प्रभु उसकी प्रार्थना को सुनकर मदद करने आ जाते हैं। मध्य रात्रि में चारो तरफ प्रकाश फैल जाता है। उसी प्रकाश के बीच में श्रीहरि प्रगट हो जाते हैं।

रुकमाबाई प्रभु के चरण में गिर पडती हैं। श्रीहरि उनके मस्तक पर अपना हाथ रखते है और कहते है कि आप धन्य है आपकी उपासना सात्विक है, आपकी भक्ति में शक्ति है। आप थोड़ी भी चिन्ता मत करना, धैर्य रखना, सब कुछ अच्छा हो जायेगा। महाराजने पूछा, तुम्हारी क्या इच्छा है ? महाराज ! आप अपनी शरण में रखिये। ए सभी कुसंगी है। मुझे आप गढपुर में जीवुबा तथा लाडुबा के पास भेंज दीजिये।

श्रीहरिने कहा अब आप का दुःख दूर हो गया। आप आंख बन्द करिये। आंख बन्द करते ही भगवान की योगमाया से रुकमाबाई गढपुर पहुँच गयीं। अब उनके आश्चर्य की सीमा न रही। भगवान के उपकार की विरुद करने लगी। आपने उचित समय पर मेरी रक्षा किया है।

दूसरे दिन रुकमाबाई का पति दरवाजा खोला तो रुकमाबाई नहीं थी। अब वे खोजते हुये गढपुर पहुंचे वहाँ पर प्रभु से मिले। प्रभु ने उनके अन्तःकरण को निर्मल कर दिया। अब श्रीहरि के चरण पर गिरकर कहने लगे आप मेरे साथ भेंजिये उन्हें कोई दुःख नहीं देगा। सभी लोग नियमपूर्वक सत्संग करेंगे और धर्म का पालन करेंगे। महाराज रुकमाबाई को बुलाकर कहे कि आप पति के साथ घर जाओं, अब आप को कोई परेशान नहीं करेगा। सभी परिवार के लोग सत्संग करेंगे। भगवान की भक्ति करेंगे कोई परेशान नहीं करेगा। ऐसा मैं आशीर्वाद देता हूँ।

रुकमाबाई पति के साथ घर जाती है। धीरे-धीरे सम्पूर्ण गाँव में सत्संग फैलने लगा। यह सत्संग का ही प्रताप है और धैर्य का प्रभाव है।

इसलिये सभी लोग को इसीतरह धैर्यपूर्वक दृढता के साथ सत्संग करना चाहिये। भगवान में दृढ भाव रखना सर्वहित कारक है। हमारी भजन-भक्ति खूब बढे ऐसी श्री नरनारयणदेव के चरणों में प्रार्थना।

अनु. पेईज नं. १० से आगे

सत्संग बालवाटिका

महाराजने यह काम किया है तो हमें अब सावधान रहना पड़ेगा। अपनी पूजा, विछावन, रोज की सामान लेकर खेत में आगये वहाँ पर मचात बनाये और उसी पर रहने लगे। रात दिन खेत की रखवाली करने लगे। समय बीतते बाजरी में से नये-नये गांसे निकलने लगे और इतना सुन्दर विकसित हुये की देखते-देखते पूरा खेत बालों से लद गया। उस में जो पाक तैयार हुआ वह पांच कलश जितना हुआ।

जमीन के मालिक दरबार वहाँ आते हैं और कहते हैं कि भगत इसमें मेरा भाग ? यह सुनकर गाँव के लोगों ने कहा कि बापू ? इस खेत में जो भी पाक हुआ है वह भगवान स्वामिनारायण की कृपा से हुआ है। इसमें आप का भाग तो हो ही नही सकता। रुडा ने अपने पुरुषार्थ से यह सब पाया है। दरबार ने कहा कि यह मै जानता हूँ कि भगवान की कृपा से सूखा के समय वरसात हुआ और इतनी सुन्दर बाजरी हुई। हमारी जिन्दगी में मैं पहलीबार इतनी सुन्दर फसल देखा हूँ। इसलिये प्रसादी के रुप में एक कलश बाजरी तो लूंगा।

पांच कलशी पाक तैयार हुआ था। उसमें से एक कलशी बाजरी जमीन के मालिक को दे दिया। भगत के हाथ में चार कलशी बाजरी आई। एक कलशी बाजरी तो पहले से घर में थी अब पांच कलशी हो गयी। भगत के कथनानुसार भगवान ने मनोरथ पूर्ण कर दिया।

जनमंगल में ''प्रभु'' शब्द का उल्लेख जनमंगल में किया गया है। जो शर्वशक्तिमान, सर्व समर्थ, सर्व सत्ताधीश, भगवान को प्रभु कहा गया है। भगवान की इच्छा से बरसात हुई। भगवान भक्त की हरपल भक्त की रक्षा करते है। जो भगवान को रखेगा भगवान उसे रखेंगे।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में फूलदोलोत्सव समप्त्र

परमकृपालु परमात्मा श्री नरनारायणदेव भगवान का प्रागट्योत्सव फाल्गुन शुक्ल-१५ को फूलदोलोत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस प्रसंग का दर्शन भाग्यवान लोगो को ही लभ्य है। श्रीहरि उन दिनों गाँव-गाँव में ऐसा उत्सव मनाते थे। हजारो लोग ऐसे उत्सव का लाभ लेकर जीवनको कृतकृत्य समझते थे। उन्हीं के वंसज अपर स्वरुप प.पू .आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री, श्री नरनारायणदेव के समक्ष रंगोत्सव खेलकर भक्तों को आनन्दित किये थे। इसबार सभा मंडप के बीच वाली सीढी के पास सुदंर मंच के ऊपर प.पू. लालजी महाराजश्री रंग खेलने को पधारे उस समय हजारो नरनारी रंग से तरबोर होने के लिये वेचैन थी। अद्‌भुत उत्सव था। दर्शन करने वालों का कोई पार नहीं था। अलौकिक उत्सव का दर्शन हो रहा था। पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री घनश्यामभाई करशनभाई पटेल यजमान बनकर लाभ लिये थे। को.पा. दिगम्बर भगत तथा जे.के. स्वामी इत्यादि संत मंडल ने सुन्दर आयोजन किया था।

-शा. नारायणमुनिदास

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग

भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव शिक्षण विभाग द्वारा ली गयी परीक्षा का परिणाम कुल केन्द्र ४०। परीक्षार्थी २३६०।

(१) बाल विभाग-१ कुल ९१० पास ८९५, अनुत्तीर्ण १५।

(२) किशोर विभाग-२ कुल १४५०, उत्तीर्ण १४३७, अनुत्तीर्ण १३।

बाल सत्संग भाग-१ (१) वालिया पीयूष वशरामभाई १००% असारवा गुरुकुल।(२) पटेल जीवन बहन हसमुखभाई १००% आनंदपुरा।(३) पटेल मित्तलबहन राकेशभाई १००% आनंदपुरा।(४) डाभी मेघनाबहन विनोदभाई १००% डांगरवा। (५) पटेल प्रियंकाबहन पंकजभाई १००% बालवा।(६) पटेल सायोना भरतभाई १००% बालवा। (७) पटेल हेपीबहन विष्णुभाई १००% बालवा।(८) फीणवीया हर्षल किशोरभाई ९८% कर्मशक्ति। (९) कोटडिया प्रियांक रमेशभाई ९६% कर्मशक्ति।(१०) सुहागिया किशन रामजीभाई ९६% हर्षद मंदिर।(११) भालाणी क्रिष्णा चंद्रेशभाई ९९% हर्षद मंदिर।(१२) पटेल मुस्कान भरतभाई ९८% हर्षद मंदिर। (१३) शियाणी अभिषेक सुरेशभाई ९६% हर्षद मंदिर। (१४) मंगागलिया शरदभाई दिनेशभाई ९५% कोटेश्वर गुरुकुल।(१५) देसाई मनन जयंतीभाई ९५% कोटेश्वर गुरुकुल।(१६) पटेल अक्षयकुमार दशरथभाई ९५% कोटेश्वर गुरुकुल।

किशोर सत्संग भाग-२ (१) कलसरीया ऋत्विक जादवभाई १००% असारवा गुरुकुल। (२) रामाणी दर्शन घनश्यामभाई १००% असारवा गुरुकुल। (३) पटेल चिराग शंभुभाई १००% असारवा गुरुकुल। (४) कातरिया चेतन मनुभाई१००% असारवा गुरुकुल। (५) गांगाणी मौलिक घनश्यामभाई १००% असारवा गुरुकुल। (६) पटेल दिव्येश अरविंदभाई १००% असारवा गुरुकुल। (७) पटेल पूनमबहन सुरेशभाई १००% मारुसणा।(८) पटेल मिन्टूबहन नटवरलाल १००% बालवा।(९) पटेल लताबहन दिलीपभाई १००% बालवा।(१०) पटेल सोनलबहन मुकेशभाई १००% बालवा।(११) खोखर यश विठ्ठलभाई ९६% हर्षद मंदिर।(१२) वाघडाल दर्शन शांतिलाल ९५% हर्षद मंदिर।(१३) गोटी हार्दिक जगदीशभाई ९५% हर्षद मंदिर।(१४) पटेल शुभ प्रहलादभाई ९५% कर्म शक्ति।(१५) वेकरीया कौशन डाह्याभाई ९५% कर्म शक्ति।(१६) सोजित्रा पार्थ विजयभाई ९५% कोटेश्वर गुरुकुल (१७) भटपाल आकाश सतीशभाई ९५% कोटेश्वर गुरुकुल। (१८) भरपाल मेहुल सतीषभाई ९५% कोटेश्वर गुरुकुल।- संचालक - देवाणी रणछोडभाई

जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १८६ वां पाटोत्सव सम्पन्न

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने जेतलपुर धाम में अपने हाथो से श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की प्रतिष्ठा की उसी समय से उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से अ.नि.प.भ. खोडाभाई मणीभाई पटेल कृते असोकभाई कल्पेशभाई, परसोत्तमभाई धरमशीभाई पटेल (काशीन्द्रा) परिवार के यजमान पद पर पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. १४ से १५-३-१२ तक होमात्मक हरियाग का आयोजन किया गया था।

फाल्गुन कृष्ण-८ को प्रातः ७-०० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक वेद विधिसे किया गया था।

सभा में स.गु.शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा महंत) ने जेतलपुर माहात्म्य की सुंदर कथा की थी। प.पू. बड़े महाराजश्री सभा में विराजमान हुये उस समय यजमान परिवार ने पूजन, अर्चन-आरती उतारकर भेंट सौगात देकर आशीर्वाद प्राप्त किया था।

''स.गु. प्रसादानंदनी वातो'' पुस्तक की द्वितीयावृत्ति का

विमोचन स.गु. श्याम स्वामी, शा. उत्तमप्रियादसजी तथा प्रकाशन में सेवा करने वाले श्री परसोत्तमभाई धरशीभाई ठक्कर (विरमगाँव) परिवार की तरफ से प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से पुस्तक का विमोचन किया गया था। नूतन हवेली निर्माण में सेवा करने वाले दाताओं का सन्मान किया गया था। प्रत्येक स्थानों से संत-महंत पधारे हुये थे।

अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इसके बाद पू. बड़े महाराजश्री यज्ञ की पूर्णाहुति करके अन्नकूट की आरती करने पधारे थे। समग्र प्रसंग में महंत के.पी. स्वामी तथा वी.पी. स्वामीने सुंदर आयोजन किया था। संचालन भक्तिनन्दन स्वामीने किया था। -शा. भक्तिनंदनदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया (रामबाग) पाटोत्सव-ब्रह्मभोजन सम्पन्न

श्रीहरिने जहाँ पर ब्रह्मभोजन करवाया था ऐसी पवित्र भूमि कांकरिया है। जहाँ पर अपना भव्य मंदिर श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज विराजमान है। सर्वोपरि श्रीहरि कृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. २१-२-१२ से ता. २७-२-१२ तक भव्य ब्रह्मभोज महोत्सव तथा अ.नि. हरगोविंददासजी की स्मृति में तथा वयोवृद्ध संत माधवप्रसाददासजी स्वामीने ९८ वें वर्ष के मंगल प्रवेश के निमित्त श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण का सुंदर आयौजन किया गया था। इस अवसर पर कथा वक्ता शा.स्वा. निर्गुणदासजी (असारवा) तथा प.पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) थे। प्रथम दिन भव्य पोथीयात्रा निकाली गयी थी। प.पू. महाराजश्रीने सर्व प्रथम पधारकर "श्री व्रजेन्द्रभुवन" का उद्घाटन करके कथा स्थल सभा में पधारे थे। यहाँ पर अपने हाथों से कथा के आरंभ में आरती किये थे। इस प्रसंग पर "कांकरिया माहात्म्य" पुस्तक का विमोचन प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों किया गया था। प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। महिलाओं की सभा में प.पू. अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी पधारकर महिला वर्ग को दर्शन एवं आशीर्वाद का सुख प्रदान की थी। कथा के प्रथम सत्र में श्री घनश्याम महाराज का प्राकट्योत्सव मना गया। ता. २५-२-१२ को महापूजा रखी गयी थी। जिसकी पूर्णाहुति प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों हुई थी। बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री सभा में पधारे थे। यजमान परिवार का सन्मान करके आशीर्वाद प्रदान किये।

ता. २७-२-१२ को प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी का महाभिषेक किया गया। बाद में कथा की पूर्णाहुति और कथा में संतो ने अमृतवाणी का लाभ दिया।

इस प्रसंग पर अखिलेश्वरदासजी महाराज, जगन्नाथ मंदिर के महंतजी, श्री आत्मानंद सरस्वतीजी (बोटाद), श्री चैतन्य शंभु महाराज, श्री प्रविणभाई तोगडिया, इसके अलांवा अपने संप्रदाय के संत, महंत, सां.यो. बहनें, पधारी थी। पुजारी स्वामी देवकृष्णदासजीने ठाकुरजी का सुन्दर श्रृंगार करके दर्शन का लाभ दिया था। पूर्णाहुति प्रसंग पर महंत स्वामीने आभार विधिकी थी। इस प्रसंग पर स्वा. राजेन्द्रप्रसाददासजी, शा. गोलोकविहारीदासजी, शा. सत्यप्रकाशदासजी, स्वा. कुंजविहारीदास, भानु स्वामी, भक्ति स्वामी, नौतम भगत ने उत्सव के समय सेवा का कार्य किया था। पारायण प्रसंग पर २१ संहिता पाठ संतो ने किया था। ब्रह्म भोजन प्रसंग पर जेतलपुर के ब्राह्मण विद्यार्थी तथा संत एवं ब्राह्मण भोजन का प्रसाद लिये थे। अनेको गाँव सत्संगी कथा श्रवण करके सात दिन तक भोजन ग्रहण किये थे।

साबरमती के हरिभक्त पारायण के यजमान पद पर थे। पाटोत्सव के यजमान श्री विनोदभाई वालजीभाई सोनी (केनिया) तथा कष्ट भंजनदेव पाटोत्सव के यजमानश्री घनश्यामभाई पारेख (गामडी) थे।

कांकरिया श्री नरनारायण युवक मंडल, कुहा गाँव, यहाँ की महिला मंडल, तथा कांकरिया के सभी भक्त तन, मन, धन से सेवा किये थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ था। सभा संचालन शा. यज्ञप्रकासदासने किया था। -शा. यज्ञप्रकाशदास

एप्रोच (बापूनगर) मंदिर का ७वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से १-३-१२ क मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक अन्नकूट आरती प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर अहमदाबाद कांकरिया, हरिद्वार, नाथद्वारा, बद्रिनाथ, प्रांतिज इत्यादि स्थानों से संत-महंत पधारे हुये थे।

सभा में महंत शा. हरिकृष्णदासजीने, स्वा. निर्गुणदासजी एवं यज्ञप्रकाशदासजीने प्रवचन किया था। अन्त में कई वर्षो से मंदिरकी सेवा करने वाले कोठारी धीरुभाई ने स्वैच्छिक निवृत्ति लिये थे, इस लिये प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्रीने उन्हें तथा नये कोठारी हरिकृष्णदासजी एवं सहायक कोठारी रमेशभाई खीचडीया का साल ओढाकर सन्मान किया था। अन्त में प.पू. महाराजश्रीने पाटोत्सव के यजमान श्री कालूभाई गोविंदभाई गजेरा परिवार तथा समस्त हरिभक्तों को आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन शा.सत्यप्रकाशदासजीने किया था।

बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवालाजी भी पधारी थी। अन्त में सभी महाप्रसाद लेकर विदा हुये थे। युवक मंडल खड़े पैर सेवा का कार्य किया था। -गोरधनभाई सीतापरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप का पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा.

देवप्रकाशदासजी एवं शा.स्वा. पी.पी. की प्रेरणा से ता. ३-३-१२ को राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप का पाटोत्सव सम्पन्न हुआ।

सर्व प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर में ठाकुरजी का अभिषेक करके आरती किये बाद में यज्ञकी पूर्णाहुति किये। इसके बाद नूतन सभा खंड का उद्घाटन किये थे । स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने भक्तों को कथा का लाभ दिया था । अहमदाबाद से स.गु.शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी पधारे हुये थे । अभयप्रकाशदासजी, दिव्यप्रकाशदासजी, मुनि स्वामी इत्यादि संतोने प्रसंगोचित्त प्रवचन किया था। अन्त में समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

बाद में दोनो मंदिर में अन्नकूट की आरती उतारने पधारे थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी।

-स्वा. चैतन्यस्वरुपदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया का ५ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया का ५ वाँ पाटोत्सव ता. ३-३-१२ को विधिपूर्वक सम्पन्न किया गया। प्रातः ६ से ७ बजे तक श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक संतो द्वारा विधिपूर्वक संपन्न किया गया। प्रातः ९ बजे जब प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे उस समय संत-हरिभक्त भव्य स्वागत किये थे। मंदिर में पधारकर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी की अन्नकूट की आरती उतारी थी।

प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव के यजमान अ.नि. श्री कांतिलाल जोइताराम भावसार परिवार के श्री दिनेशभाई तथा श्री विनोदभाईने प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था। इस प्रसंग का सभा संचालन स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (नारायणघाट महंत)ने किया था। घाटलोडिया मंदिर के ट्रस्टी तथा अन्य अग्रगण्य हरिभक्तों ने प.पू. महाराजश्री का फूलहार पहनाकर स्वागत किया था।

नाना स्थानो से संत पधारे हुये थे जिसमें कालुपुर से महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, देव स्वामी (नारायणघाट), रघुवीर स्वामी, कृष्णप्रसाद स्वामी, भक्ति स्वामी, जगदीश स्वामी तथा अभय स्वामी इत्यादि संत पधारे थे। अन्त में समस्त सभाजनो को प.पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभी भक्तप्रसाद लेकर स्वस्थान गमन किये थे। - प्रवीणभाई पटेल

कोठंबा मंदिर का पाटोत्सव धूमधाम से संम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के मंहत स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायणं मंदिर का १७ वाँ पाटोत्सव जेतलपुरधाम के स.गु. श्याम स्वामी, शा. स्वा. उत्तम स्वामी तथा भक्तिनन्दन स्वामी की उपस्थिति में ता. २०-३-१२ को धूमधाम से मनाया गया था। जिस के यजमान को. गोविंदभाई रसिकलाल काछिया परिवार थे। प्रथम ठाकुरजी का अभिषेक पश्चात् नगर यात्रा निकाली गयी थी। यजमान परिवार ने संतो का पूजन किया था। दोपहर ३ बजे से ५ बजे तक प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की उपस्थिति में बहनो का सत्संग शिबिर धूमधाम से सम्पन्न हुआ था। जिस में जेतलपुर से सांख्ययोगी बाई कथा का लाभ दी थी। बाद में सभी हरिभक्त प्रसाद लेकर धन्य हुये थे। - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा शा. भक्तिनंदनदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली (जी. खेडा) रजत जयंती महोत्सव

महाप्रतापी रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की छत्र छाया के कलोली गाँव में मंदिर का २५ वर्ष पूर्ण होते ही प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुरधाम के महंत स्वामी की प्रेरणा से रजत जयंती महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. ८-३-१२ से १०-३-१२ तक श्रीमद् भागवत दसम स्कन्धत्रिदिनात्मक पारायण स्वा. हरिॐप्रकाशदासजीने किया था। साथ में शा.स्वा. भक्तिनन्दनदासजी भी कथा श्रवण कराये थे । इस के साथ त्रिदिनात्मक महाविष्णु याग का भी आयोजन किया गया था। जिस में अनेको यजमान भाग लिये थे।

ता. १०-३-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे उस समय भव्य स्वागत किया गया था। प.पू. महाराजश्री ने सर्वप्रथम अभिषेक करके अन्नकूट की आरती उतारे बाद में यज्ञ की पूर्णाहुति किये थे। इसके बाद सभा में पधारे और कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारे। बाद में यजमान परिवार प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके स्वयं आशीर्वाद प्राप्त किया था। अनेको धाम से सन्त पधारे हुये थे जिसमें जेतलपुर, छपैयाधाम, मूली, चराडवा, मथुरा, नारणपुरा, कांकरिया, कालुपुर, महेसाणा तथा खेडा से संत पधारकर अमृतवाणी का लाभ दिये थे । पू. आत्मप्रकाश स्वामीने छोटे मंदिर को बड़ा रुप देना है इस तरह का भार दिया था. मंदिर के लिए अपना मकान देने वाले श्री रणछोडभाई गणात्रा तथा अ.नि. पोपटभाई लालजीभाई ठक्करने भी नूतन मंदिर के लिये पांच लाख से भी अधिक सेवा की थी। इस लिये सेवा करने वाले सभी भक्तों को सन्मानित किया गया था। अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने नियम, निष्ठा, पक्ष रखने की वाद कहकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। सभी प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे । सेवकों की सेवा सराहनीय थी। स्वा. भक्तिनंनदासजीने समग्र सभा का आयोजन किया था। - महंत के.पी. स्वामी, जेतलपुर

छपैयाधाम में सत्संगिजीवन पन्चाह्न पारायण

सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रागट्य भूमि छपैयाधाम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छपैया मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से २८-२-१२ से ३-३-१२ तक त्रिदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण शा.स्वा. भक्तिनंदनदास (जेतलपुरधाम) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। इसके यजमान सुरत के हरिभक्त थे। छपैयाधाम में हरिभक्त कथा

सुनकर अपने जीवन को धन्य माने थे।

इस प्रसंग पर जेतलपुरधाम से पू. पी.पी. स्वामी पधारकर यजमान हरिभक्त को आशीर्वाद दिये थे। ता. ५-३-१२ से ७-३-१२ तक महाविष्णुयाग सूरत के हरिभक्तों के यजमान पद पर हुआ था। ता. ७-३-१२ के मंदिर में विराजमान देवों का षोडशोपचार पूजन के साथ अभिषेक, अन्नकूटदर्शन इत्यादि कार्य यजमान परिवार द्वारा किया गया था। श्री घनश्याम महाराज के जन्म स्थान में सूरत के यजमानों ने योगदान दिया था। इस प्रसंग पर छपैया के संत मंडलने हरिभक्तों की सुंदर सेवा करके प्रसन्न कर दिया था। समग्र आयोजन ब्र. हरिस्वरुपानंदजी तथा ब्र. पवित्रानंदने किया था।

- कनुभाई तथा अंबालाल दवे, छपैयाधाम

गांधीनगर में श्री भक्तचिंतामणी पंचाह्न पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से गांधीनगर में श्री रावजीभाई ईश्वरभाई परिवार की तरफ से श्रीमद् भक्तचिंतामणी ग्रंथ का पंचाह्न पारायण स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) के वक्तापद पर हुआ था.

इस प्रसंग पर यजमान परिवार के आमंत्रण पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे और यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद भी दिये थे। बहनों के आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवाला पधारी थी और बहनों को हार्दिक आशीर्वाद भी दी थी। अलग-अलग धाम से संत पधारे थे जिस में जेतलपुर धाम से पू. शा. आत्मप्रकाशदासजी, अयोध्या से देव स्वामी, माधव स्वामी, कालुपुर से जे.के. स्वामी कोठारी, विष्णु स्वामी, कलोल के महंत स्वामी, मूली से जे.पी. स्वामी, प्रेमस्वरुपद स्वामी, जमीयतपुरा तथा माणसा से संत पधारे थे। सभा संचालन कुंजविहारीदासजी गुरु जे.पी. स्वामी (जीनागढ)ने किया था।

- श्री नरनारायणदेव युक मंडल, माणसा

नूतन मदिर भाटेरा भूमिपूजन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत धर्मस्वरुपदासजी गुरु स्वा. जानकीवल्लभदासजी (नाथद्वारा) की प्रेरणा से ता. १९-२-१२ को भाटेरा गाँव में (ता. कठलाल) नूतन हरिमंदिर का भूमिपूजन प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ था।

प्रासंगिक सभा में गाँव के अग्रगण्य हरिभक्त प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन-अर्चन, आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद से स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी, स.गु. स्वा. जगतप्रकासधासजी तथा योगी स्वामी पधारे थे।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने मंदिर निर्माण कर्ता स्वामी धर्मस्वरुपदासजी तथा हरिभक्तों के ऊपर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे। आंत्रोली, कठलाल, सींधाली, वासणा तथा कपडवंज के बहुत सारे हरिभक्त लाभ लिये थे । सभा संचालन स्वा. वासुदेवचरणदाजीने किया था।

अन्य सेवा में विवेक स्वामी, श्रीजी स्वामी, नरेन्द्र भगत तथा विक्रमभाई थे।

- जीतु भगत, नाथद्वारा

श्री स्वामिनारायण मंदिर भात का पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग के यजमान परिवार द्वारा महापूजा, अभिषेक, अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम सम्पन्न हुये थे। जेतलपुरधाम से पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा वी.पी. स्वामी पधारकर कथा श्रवण का लाभ दिये थे। मंदिर के दास स्वामीने सुंदर आयोजन किया था। सभी दर्शन करके प्रसाद लेकर धन्य हो गये।

- शा. भक्तिनंदनदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा में ६ठ्ठा पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत शा.स्वामी आत्मप्रकासदासजी तथा पू.शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा प.भ. जसुभाई पटेल के यजमान पद पर यहाँ के मंदिर का ६ठ्ठां पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। ता. १६-३-१२ को प्रथम महापूजा की गयी बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे तब हरिभक्तों द्वारा धूमधाम से स्वागत उत्सव किया गया। सर्व प्रथम महाराजश्री मंदिर में अन्नकूट की आरती उतारकर बहनों के मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करके अन्नकूट की आरती उतारे बाद में सभा में पधारे थे। सभा में यजमान परिवार द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया। इस प्रसंग पर जेतलपुर से श्याम स्वामी, महंत के.पी. स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी, धोलका से पूर्णप्रकाश स्वामी तथा कालुपुर से संत पधारकर अमृतवाणी का लाभ दिये थे। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

- शा. भक्तिनंदनदास, जेतलपुरधाम

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (पुरुषोकां) पाटोत्सव सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं स.गु. स्वा. वासुदेवचरणदासजी एवं स्वा. आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा का ८६ वाँ पाटोत्सव ता. २५-२-१२ से २९-२-१२ तक धूमधाम से संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर ता. २५-२-१२ से २९-२-१२ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न पारायण शा.स्वा. निर्गुणदासजीने किया था। प्रथम दि प.पू. बड़े महाराजश्री जब पधारे उस समय गाँव के नर नारी दर्शन का लाभ लेकर जीवन को धन्य माने। सांस्कृतिक कार्यक्रम का सुन्दर आयोजन किया गया था। २९-२-१२ को जब

प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे तब भूतो न भविष्यति जैसा स्वागतोत्सव किया गया। जतन बा का यह गाँव धर्मकुल के लिये न्यौछावर है। स्वागत शोभायात्रा में भजन मंडली, वांस पर चलने वाले, पट्टाबाज, विविधवेशभूषा वाले, साफाबांधकर अनेको घुडसवार, वाहनो पर बैठे पूजनीय संत, विविधप्रसंग की झांकी कराने वाले दृश्य शोभा बढा रहे थे। इस शोभायात्रा में असंख्य धर्मकुल प्रेमी भक्त नर-नारी उमड़ पडे थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सर्व प्रथम मंदिर में पधारकर ठाकुरजी का अभिषेक किये और अन्नकूट की आरती उतारे।

प्रासंगिक सभा में प.पू. महाराजश्री का यजमान परिवार ने पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

अनेको स्थान से संत पधारे थे जिसमें अहमदाबाद, मूली, वडताल, माणसा, छपैया तथा अन्य धाम से आये संतो ने अपनी वाणी का लाभ दिया था। प.पू. महाराजश्री पारायण की पूर्णाहुति की आरती उतारकर धर्मकुल के निष्ठावाले भक्तों को अपने हार्दिक आशीर्वचन से सन्तुष्ट कर दिये। सभी से कहा कि सत्संग में निष्ठा बनी रहे तथा आनेवाली पीढी सत्संग के प्रति दृढ निश्चयी बने इसके लिये सभी को प्रतिदिन मंदिर में दर्शन की टेव रखनी होगी। बहनो को आशीर्वाद तथा दर्शन का सुख देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी भी पधारी थी। सभी आगन्तुक मेहमान प्रभु का प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किये थे।

– डाभी मफाजी सरदारजी डांगरवा

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोविन्दपुरा वेडा ७० वाँ पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा भक्तवत्सलदासजी की प्रेरणा से प.भ. रसिकभाई माधवदास तथा प.भ. मुकेशभाई आत्माराम परिवार की तरफ से ता. ११-३-१२ को श्री स्वामिनारायण मंदिर का ७० वाँ पाटोत्सव सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर साधु भक्तवत्सलदास तथा पुजारी वंदनप्रकाशदास (लींबडी) ने कथा सुना कर सभी को सन्तुष्ट किया। प.पू. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा की शोभायात्रा सारे गाँव में निकाली गयी थी। इस प्रसंग पर सभी गाँव के नरनारी भोजन का प्रसाद लिये थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर सेवा का कार्य किया था।

– को. राजेशभाई

सत्संग का नूतन गाँव भाभर (बनासकांठा) में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से बनासकांठा के रेतीवाले रणप्रदेश वाले भाभर गांव में जहाँ पर श्री नरनारायणदेव के अडिग निष्ठावाले हरिभक्त है ऐसे गांव में ता. २७-२-१२ को दरबार वनराजसिंह हिंमतसिंह राठोड के निवास स्थान पर एक दिव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में श्री नटुभाई कानाबारे (बिरडी धामवाला) सर्वोपरि मूल संप्रदाय तथा श्री नरनारायणदेव के आश्रितों को गौरव सन्मान कथामृतपान कराये। इस प्रसंग पर डीसा, थरा, हारीज, राधनपुर, दियोदर तथा देवका पडी के प्रतिष्ठित हरिभक्त पधारकर लाभ लिये थे। यहाँ के विस्तार में श्रीहरि पधारे नही थे लेकिन उनकी दृष्टि रही होगी जिसके फलस्वरुप धर्मकुल मुकुटमणी आचार्य महाराजश्री पधारेंगे और मनोरथ पूर्ण करेंगे। वह अर्थलाभ आज दिखाई दे रहा है। श्री नटुभाई ने हजारो हरिभक्तों से कहा कि अहमदबाद का विश्व में सर्व प्रथम मंदिर जहाँ पर श्रीहरि स्वयं श्री नरनारायणदेव के रुप में स्वयं अपने ही स्वरुप को बाहो में भरकर प्रतिष्ठित किये थे। जिसकी शरणागति हम सभी को स्वीकार करना है। वही एक मात्र मोक्षदाता है और कल्याण दाता है। हमेशा मूल में पानी देने से ऊपर का भाग खिल उठता है। पत्ते और टहनी में पानी देने से पेड़ में हरियाली नहीं आती। प.भ. नटुभाई कानाबार ५०० कि.मी. विरडीधाम से भाभर सत्संग कराने के लिये आते है। थरा में कानाबार परिवार की कुलदेवी बालवी माताजी का ६५ लाख के खर्च से शिखरी मंदिर का निर्माण हुआ है। लेकिन यहाँ पर बिरडीधाम तथा थरा में स्वामिनारायण नाम का ही रटन होता है। यहाँ पर प.भ. नटुभाई कानाबार के माध्यम से ४०० घर श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल का आश्रित-निष्ठावान हुये हैं। धन्य है नटुभाई कानाबार को जिन्हों ने नंगे पैर गाँव-गाँव घूमकर सत्संग का प्रचार किया है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा दृष्टि बनासकांठा के ऊपर अपार हुई है। जिसके परिणा मस्वरुप आज यह क्षेत्र भी सुखी हुआ है।

– रमेशभाई नरभेरामभाई कानाबार भाभर

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यारा (हालार) मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के देश विभाग के श्री स्वामिनारायण मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा ता. २४-२-१२ से ता. २८-२-१२ तक धूमधाम से संपन्न हुई।

पूज्य संत अ.नि. स्वा. केशवजीवनदासजी तथा अ.नि. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी की दिव्य प्रेरणा से मूली के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में यहाँ मंदिर का सुन्दर निर्माण कार्य हुआ है। समस्त गाँव के आर्थिक सहयोग से मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग के उपक्रम में श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धका पारायण शा. विश्वप्रकासदाजी गुरु शा.स्वा. आत्मप्रताशदासजी (कलोल महंत) तथा शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी (चारडवा महंत) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ।

ता. २८-२-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे उन्हीं के हाथों मूर्ति प्रतिष्ठा तथा त्रिदिनात्मक श्रीहरियाग की पूर्णाहुति हुई थी। बाद में सभा में विराम हुआ था।

प्रासंगिक सभा में मूली के महंत स्वामी, जमीयतपुरा के घनश्याम स्वामी, जेतलपुर के के.पी. स्वामी, ब्रह्मचारी पूर्णानन्दजी आदि संत पधारे थे। अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

ध्रांगध्रा में महिला सत्संग शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की प्रेरणा से ध्रांगध्रा बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा २६-२-१२ को ब्रह्मभोजन का कार्यक्रम तथा महिला शिबिर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की उपस्थिति में संपन्न हुआ था। जिस में प्रत्येक मंदिरों से सां.यो. बहने पधारी थी। सां.यो. कुंवरबा मोरबी से, सां.यो. कोकिलाबा सुरेन्द्रनगर से, अमदावाद से सां.यो. भारतीबा, सां.यो. चंपाबा, सां.यो. मधुबा, सां.यो. शीतलबहन, गढडा से सां. मेधनाबहन, जेतलपुर से सां.यो. नर्मदाबा, विरमगाँव से सां.यो. गीताबा, हलवद से सां.यो. मधुबा, सरा से पुष्पाबहन, हरिपर से सां.यो. मरघाबहन इत्यादि अपने मंडल के साथ सां.यो. एवं कर्मयोगी बहने इस कार्यक्रम में पधारी थी। प.पू. गादीवालाजी के सानिध्य में सभी मिलकर धुन-कीर्तन की थी। अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव तथा मूली से राधाकृष्णदेव की वफादारी तथा निष्ठा रखने पर विशेष बल दिया गया था। अन्त में प.पू. गादीवालाजीने नवधाभक्ति के ऊपर तथा हरिगीता के उपर सुन्दर विवेचन करके आगन्तुक सभी सां.यो. बहनो को तथा कर्मयोगी बहनोंको हार्दिक आशीर्वाद दिया था। यहाँ के मंदिर का सां.यो. कंचनबा, सां.यो. भगवतीबा तथा सां.यो. हीराबा एवं सत्संगी बहनोने सुन्दर आयोजन किया था। सां.यो. बहने ७५ जितने गाँवों में घूमकर सत्संग में जागृति लायी थी। - अनील बी. दुधरेजिया, ध्रांगध्रा

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईटास्का के श्री स्वामिनारायण मंदिर के स्वामी निलकंठप्रसाददासजी एवं पुजारी शांतिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव एवं महाशिवरात्री का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। यहाँ के मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव के सानिध्य में ता. १०-३-१२ से १७-३-१२ तक श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य पारायण स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) के सुमधुर कंठ में हजारो भक्तोंने कथाश्रवण किया था।

कथा के मुख्य यजमान प.भ. भरतभाई तथा उर्मिलाबहन पटेल का परिवार था। जिनकी माताजी संतोकबहन पटेल के स्मरणार्थ पारायण कराया गया था। सह यजमान प.भ. राजूभाई तथा छायाबहन शाह थी।

पारायण के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर अलौकिक दर्शन एवं आशीर्वाद का सुख प्रदान किये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से वोशिंग्टन डी.सी. में आई.एस.एस.ओ. का नूतन भव्य मंदिर बनाने का आयोजन किया गया है। जिस में यहाँ के हरिभक्तों ने खूब बड़ी धन राशी का योग दान किया है। जिसे जानकर प.पू. महाराजश्री खूब आनंदित हुये है। - वसंत त्रिवेदी

विहोकन मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी का पदार्पण

श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में ता. १२-२-१२ को सायंकाल प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। महाराजश्री के सानिध्य में पू. बिन्दुराजा के पुत्र रत्न चि. सौम्यकुमार तथा चि. सुव्रतकुमार के ९ वीं वर्षगांठ को वहाँ के भक्तों ने बड़े धूमधाम से मनाया था। इस प्रसंग पर ठाकुरजी का सिंहासन रंगबेरंगी फूलो से सजाया गया था. प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ ही दोनो कुमार स्थान ग्रहण किये थे। प्रथम स्वामिनारायण महामंत्र की धुन एवं कीर्तन-भजन किया गया। मंदिर के महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी ने फूलहार से प.पू. बड़े महाराजश्री का स्वागत किया बाद में प.पू. बड़े महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव के प्रसादी का हार दोनों कुमारों को पहनाकर हार्दिक आशीर्वाद दिया। इस कार्यक्रम में बर्थडे का उपक्रम भी पूरा हो गया। प.पू. बड़े महाराजश्री का विहोकन, चेरीहील, कोलोनिया, पारसीपेनी, न्यूयोर्क तथा बोस्टन के हरिभक्तोंने स्वागत पूजन किया था।

पू. बिन्दुराजा का भी बहनों ने स्वागत किया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते हुये कहा कि जब भी किसी को अवसर मिले तो उसका लाभ अवश्य लेना चाहिये। सत्संगियो को ऐसे अवसर को कभी नहीं छोड़ना चाहिये। ऐसे प्रसंग मंदिरों में ही सम्पन्न होते हैं. आप सभी इन दोनो कुमारों को विशेस रुप से आशीर्वाद दीजियेगा। हमारे कुटुंब को भी आप सभी के आशीर्वाद की जरुरत है। दोनो कुमार खूब संस्कारी बने, भजन भक्ति करे, इनका सत्संग बल उत्तरोत्तर बढता रहे, सत्संग की सेवा करें ऐसे आशीर्वाद की अपेक्षा के साथ सुन्दर केक काटकर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा साथ में बिन्दुराजा भी बर्थडे का उत्सव मनायी थीं। - प्रविणभाई शाह

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में महाशिवरात्री को सायंकाल सुंदर सत्संग सभा का आयौजन किया गया था। ठाकुरजी का सिंहासन रंगबिरंगी सुगन्धित पुष्पमालाओं से सजाया गया था। भगवान के मस्तक को सुन्दर मुकुट से सजाया गया था। श्री पिनाकिन जानी द्वारा यजमान एवं सह यजमान के पद से शिवपूजन संपन्न हुआ था। महंत स्वामीने इस उत्सव में सेवा करने वाले भक्तों को आशीर्वाद दिया था।

- प्रवीण भाई शाह

वोशिंग्टन डी.सी.

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से १८-२-१२ शनिवार सायंकाल ५-१० बडे से ९-१० बजे तक इल्करीझ चर्च में सुन्दर सत्संग सभा में कथा-धून-कीर्तन-आरती तथा नित्यनियम किया गया था। एल.के. मंदिर से

शा.धर्मकिशोरदासजी ने सेलफोन द्वारा कथा का लाभ दिया था। महाशिवरात्रीका उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। बाद में प्रसाद ग्रहण करके सभी विदा हुये थे। - कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिनेमेन्सन में फूलदोलोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं यहाँ के सिनेमन्सन मंदिर के स्वा. विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव फूलदोलोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। श्री नरनारायणदेव को नानाविधफूलों से अलंकृत किया गया था। शा. स्वामीने श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य बड़े सुंदर ढंग से समझाया था। आरती के यजमान श्री भूपेन्द्रभाई (ओडवाला) थे। थाल के यजमान प.भ. जयंतीभाई, बबलदास (मोखासण) थे। दोनो यजमानों ने साथ में आरती करने का लाभ लिया था। श्री नवीनभाई जी. राजपुरवाले केक बनाकर लाये थे। इस केक को श्री नरनारायण युवक मंडल ने साथ में केक काटकर रंगोत्सव को मनाया था। प्रत्येक सेवा कार्य में शा. अभिषेकप्रसाददासजी, श्री जगदीशभाई (जासलपुर) श्री कार्तिकभाई (वडु) तथा भोजनालय में बहनों की सेवा सराहनीय थी। अन्त में प.भ. राजूभाईने सभी का आभार व्यक्त किया था। सभी लोग प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे। - शा.स्वा. विश्वप्रकाशदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर गेटवीक (यु.के.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी हरिनन्दनदासजी की प्रेरणा से यहाँ के गेटवीक श्री स्वामिनारायण मंदिर में माघ कृष्ण-१४ को महाशिवरात्री का कार्यक्रम अरविंदभाई पटेलने शंकर भगवान के समक्ष सुंदर हिमालय का दृश्य बनाकर दर्शन का लाभ दिलवाया था। ब्राह्मणों द्वारा पूजन-भजन-कीर्तन का कार्यक्रम रखा गया था। ५० जितने हरिभक्त शिवपूजन का लाभ लिये थे। बाद में सभी प्रकार के फलाहार श्री अरविंदभाई पटेल की तरफ से करके विदा हुये थे।

इस प्रसंग पर प्रमुख श्री जीतुभाई पटेल, नलीनभाई तथा दीलीपभाई आदि हरिभक्त सेवा में जुडे थे।

ता. ८-२-१२ से ११-२-१२ तक प.पू. बड़े महाराजश्री प.भ. प्रकाशभाई के पुत्रो को आशीर्वाद देने के लिये पधारे थे। विल्सडन मंदिर में सत्संग सभा रखी गयी थी। जिस में क्रोली मंदिर के संतोने कथा का लाभ दिया था। सभा के अन्त में प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। अन्तिम दिन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सभा में श्री प.पू. बड़े महाराजश्री सभी को आशीर्वाद देकर सभी को प्रसन्न किये थे। वहाँ से अपने हेरो मंदिर में दर्शनार्थ पधारे थे। - कल्पेशभाई पटेल

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

कालीयाणा (ता. विरमगाँव) : श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के अनन्य निष्ठावान सेवा के अंगवाले प.भ. डाह्याभाई चेलाभाई बूटिया के पौत्र श्री प्रदीपभाई गणेशभाई बूटिया (उ. २१ वर्ष) ता. १७-३-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

एरवाडा (ता. दशाडा) : श्री कल्पेशभाई धनाभाई पटेल (उ. १९ वर्ष) प.भ. डाह्याभाई चेलाभाई बूटिया की बेटी का भांजा ता. १७-३-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं। दोनो परिवार को श्रीजी महाज एकाएक आई हुई आपत्ति में खूब धैर्य दे ऐसी प्रार्थना।

बीलीया (ता. सिद्धपुर) : बहनों के मंदिर में सेवा पूजा करती हुई प.भ. गोदावरी बा भावसार (उ. ९२ वर्ष) ता. १५-३-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

अहमदाबाद (धरमपुर) : श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के निष्ठावान प.भ. जीवराजभाई परसोत्तमदास पटेल तथा प.भ. कांतिभाई परसोत्तमदास की माताजी प.भ. करवीबा (उ. ९० वर्ष) ता. १६-२-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

अहमदाबाद : प.भ. नारणभाई ईश्वरभाई (सोजावाला) के पुत्र प.भ. प्रवीणभाई पटेल के चि. पुत्र श्री देवर्ष (उ. १५ वर्ष) ता. २-३-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं.

अहमदाबाद : प.भ. दर्शन रसिकभाई सोमाभाई मोदी (माणसावाला) (उ. २२ वर्ष) ता. १६-३-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।